गणित की कक्षा

सउद अहमद ख़ान



राधाकृष्णन कहते हैं कि, "समाज में अध्यापक का स्थान बड़ा महत्वपूर्ण है। एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को सामाजिक परम्पराएँ तथा तकनीकी कौशल पहुँचाने का केन्द्र है और ज्ञान के प्रकाश को प्रज्वलित रखने में सहायक होता है।" शिक्षक को सभी शैक्षिक कार्यक्रमों की आधारशिला या धुरी कहा जाता है।

इस लेख में शिक्षक के द्वारा गणित के शिक्षण में छात्राओं की रुचि को जागृत करने के प्रयास को लिखने की कोशिश की है।

मैं सउद पिछले पाँच वर्षों से अज़ीम प्रेमजी विद्यालय में कक्षा 6, 7 और 8 में गणित का अध्यापक हूँ। हर कक्षा में 3-4 बच्चे गणित में रुचि कम रखते हैं। दो साल पहले कक्षा 6 की तीन छात्राएँ जिनकी गणित में रुचि कम होने के साथ ही उनका व्यवहार भी सहपाठी एवं अध्यापकों के साथ ठीक नहीं था। कक्षा में तेज़ आवाज़ में बोलना, अप्रिय व्यवहार करना एवं चीखकर बोलना, अपशब्दों का प्रयोग, झगड़ा करना इत्यादि।

मैंने इन तीनों छात्राओं के साथ अलग से काम करने का सोचा। सबसे पहले मैंने इन तीनों के घर जाकर इनके घर में व्यवहार एवं कार्य को लेकर चर्चा की जिस से कई बातों की जानकारी मिली। इनके व्यवहार से कभी-कभी घर में अभिभावकों को भी दिक़्क़त का सामना करना पड़ता था। उन्होंने हमें विश्वास दिलाया कि वह भी घर पर अपनी बेटी का ख्याल रखेंगे और सहयोग भी करेंगे। मैंने उनसे कहा कि इनकी पढ़ाई-लिखाई की ज़िम्मेदारी मेरी बाक़ी इनके व्यवहार एवं किस तरह के कपड़े पहनकर स्कूल आना है, एक माता-पिता होने के नाते इस बात की ज़िम्मेदारी आपकी होनी चाहिए। बातों-ही-बातों में मैंने उनसे इस बात की इजाज़त ले ली कि स्कूल की छुट्टी के बाद इनको आधा घण्टे के लिए अलग से गणित पढ़ाऊँगा।

अब मैंने इन तीनों पर ध्यान देते हुए गणित विषय में इनके साथ स्कूल की छुट्टी के उपरान्त काम करना आरम्भ किया। जिसमें सबसे पहले कुछ हल्के सवालों के साथ इनको जोड़ा। उस सवाल के हल करने में क्या समझ में आया और जो सवाल हल नहीं हो सका उसमें क्या समझ में नहीं आया व सवालों को हल करने में होने वाली कठिनाई के बारे में चर्चा की, जिसमें निम्न बातें समझ में आईं -

- गणित विषय से भय
- कक्षा में ध्यान न देना
- गणित की मूलभूत अवधारणाओं की समझ न होना
- घर में सहयोग न मिलना

इनकी इन सभी बातों का हल मेरे पास नहीं था। हमने मिलकर यह बात तय की कि हम पिछली बातें नहीं सोचेंगे अपितु अपने सवालों को हल करेंगे। तीन माह बाद इन प्रश्नों पर पुन: विचार करेंगे। समय कैसे बीत गया पता नहीं चला। प्रयास और सहयोग के साथ उनमें बदलाव दिखने लगा। कक्षा में अपने विषय के सम्बन्ध में जानकारी जमा करना, सहपाठी एवं अध्यापकों के साथ चर्चा करना, अपने काम को पूरा करना और सबसे महत्त्वपूर्ण बात है कि अपने किए गए काम को समझ के साथ दूसरों के साथ साझा करना।

माता-पिता के सहयोग एवं विश्वास पर मैं पूर्ण होता हुआ नज़र आया। यह विश्वास मेरा उन छात्राओं पर था। हर माता-पिता अपने बच्चे के भविष्य को लेकर चिन्तित होते हैं और पढ़ाई की गम्भीरता की बात को समझ गए थे इसलिए समय-समय पर वह मुझसे फोन पर बातचीत कर लेते थे। पिछले कई महीनों की मेहनत अब रंग लाती हुई नज़र आई। कक्षा में उनका अन्य विद्यार्थियों के साथ व्यवहार में बदलाव दिखने लगा। अब गणित की कक्षा में सवालों को हल करने में उनको मज़ा आने लगा। सीखना-सिखाना दोनों तरफ से चलने वाली प्रक्रिया है जिसमें मैंने भी उनसे बहुत कुछ सीखा।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर की यह बात मुझे बेहतर लगती है - "एक अध्यापक वास्तविक अर्थों में नहीं सिखा सकता, जब तक कि वह स्वयं भी सीख न रहा हो चूँकि एक दीपक दूसरे दीपक को प्रज्वलित नहीं कर सकता जब तक उसके पास अपनी ज्योति न रहे।"

सउद अहमद ख़ान
शिक्षक, अज़ीम प्रेमजी स्कूल
दिनेशपुर, उधमसिंह नगर
saud.khan@azimpremjifoundation.org